

ॐ सत्

- १ बिना नयन पावे नहीं, बिना नयनकी बात;
सेवे सद्गुरुके चरन, सो पावे साक्षात्. १
- बूझी यहत जो प्यासको, है बूझनकी रीत;
पावे नहीं गुरुगम बिना, ऐही अनादि स्थित. २
- ऐही नहि है कल्पना, ऐही नहीं विभंग;
कई नर पंचमकालमें, देभी वस्तु अभंग. ३
- नहि दे तुं उपदेशकुं, प्रथम लेहि उपदेश;
सबसें न्यारा अगम है, वो ज्ञानीका देश. ४
- जप, तप और व्रतादि सब, तहां लगी भ्रमरूप;
जहां लगी नहि संतकी, पाई कृपा अनूप. ५
- पायाकी ये बात है, निज छंदनको छोड;
पिछे लाग सत्पुरुषके, तो सब बंधन तोड. ६